COSMOS An International Journal of Art & Higher Education
Volume 1 / No 2 / Jul-Dec 2012

रोहित यादव का काव्य–साहित्य : अब हल्ला बोल

[1]अनीता

प्रस्तावना

बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री रोहित यादव एक ऊर्जावान रचनाकार हैं। इन्होंने हिन्दी–साहित्य की लगभग हर विधा में लिखा है और इनका लेखन–क्षेत्र विराट, अनोखा तथा अद्वितीय है। इस समर्पित लेखक की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि इनकी रचनाधर्मिता किसी विषय–विशेष तक सीमित नही है। पहले पत्रकारिता और फिर लोक–साहित्य को समर्पित श्री यादव अब सृजनात्मक साहित्य की ओर अधिक उन्मुख हुए हैं। सृजनात्मक साहित्य में भी इनकी प्रतिभा का एक विशिष्ट आयाम है इनके काव्य का। इनकी कविताएँ इनके आस–पास विचरती हैं। वैसे भी, बढ़ते हुए भूमंडलीकरण में आंचलिक शब्द धीरे–धीरे लुप्त होते जा रहे हैं। श्री यादव की कुछ कविताएँ उस आंचलिकता को बचाये रखने का भरसक प्रयास है जिसके बिना भारतीय मानसिकता की कल्पना भी मुश्किल है। यादव जी वस्तुतः फणीश्वरनाथ 'रेणु' की परंपरा में हैं और संभवतः ऐसे एकमात्र रचनाकार हैं, जो एक हाथ में हल और दूसरे हाथ में कलम चलाते है। पत्रकारिता तथा लोक–साहित्य की भांति काव्य को भी श्री यादव ने पर्याप्त समृद्ध किया है। भले ही यह काव्य से बाद में जुड़े लेकिन अब इस क्षेत्र में स्पष्ट पहचान बनकर उभरे हैं।

श्री रोहित यादव ने काव्य में छन्दमुक्त कविता, कुण्डलियाँ, दोहा आदि अनेक विधाओं में सृजन किया है। इन प्रमुख विधाओं में इनकी स्वतंत्र कृतियाँ भी प्रकाशित हैं जिनके नाम है–'अब हल्ला बोल' (कविता–संग्रह), 'बोल मितवा बोल' (कुण्डली– संग्रह) और 'जलता हुआ चिराग' (दोहा–संग्रह)। ये कृतियाँ रूवरुप की दृष्टि से अलग–अलग विधाओं की हैं लेकिन इन सभी की भावभूमि एक ही है। यहाँ प्रस्तुत है इन कृतियों का संक्षिप्त परिचय।

अब हल्ला बोल :

'अब हल्ला बोल' श्री रोहित यादव की २८ छन्दमुक्त कविताओं का संग्रह है जिसे अभिव्यक्ति प्रकाशन, सैदपुर, मंडी अटेली–१२३०२१ हरियाणा द्वारा वर्ष २००६ में प्रकाशित किया गया था। हरियाणा साहित्य–अकादमी, पंचकूला के पूर्व निदेशक डॉ॰ चन्द्र त्रिखा की भूमिका से युक्त इस संग्रह की प्रमुख कविताएं हैं–'मैं और पीपल', 'धरोहर और पूंजी', 'अलगाववाद', 'रावण', 'उबलते सवाल,' 'मैं लडता रहा', 'अब हल्ला बोल', 'एक प्रश्न', 'दुःख' आदि। संग्रह की अधिकतर कविताएं ग्राम्य जीवन एवं सामाजिक सरोकारों से जुड़ी हैं।

कर्मठ व्यक्तित्व और जीवट के धनी श्री यादव की कविताओं में समाज में व्याप्त विभिन्न विसंगतियों एवं विद्रूपताओं का यथार्थ चित्रण हुआ है। कालांतर का बोध कराती तथा सामाजिक अव्यवस्था पर प्रहार करती 'अलगाववाद' कविता की निम्नलिखित पंक्तियों में कवि ने बताया है कि महानगरों के बढ़ते प्रभाव के कारण गांवों का वातावरण दूषित हो रहा है तथा वहां शहरी विकृतियाँ पनपने लगी हैं–

महानगर की हवा ने
गांव दिया है बांट।
एक घर दूजे घर से
आज दिया है काट।
आधुनिकता का चढ़ा
इन पर ऐसा रंग,
हो रहे हैं यहां
अब उजड़ने के ढ़ंग।

. . . . . .

गांवों पर चढ़ आया
कैसा अनचाहा भूत,
निर्भय होकर काट रहा
अलगाववाद का सूत।

यादव जी ने इनसान को इनसान का शत्रु और आतंकवाद को इनसानियत के माथे का बदनुमा दाग माना है। इन्हें लगता है जैसे गाँव–शहर अब जंगल में तब्दील हो गये हैं, जहाँ आदमखोर बसते हैं–

जब मैं देखता हूं
अपने आस–पास का माहौल,
तो मुझे लगता है कि
मैं इन्सानों की बस्ती से
निकलकर/जंगल में आ गया हूं,
जहां आदमखोर जानवर
मानवता को नोंच–नोंच कर,
खाने लगे हैं।

1 *शोधार्थी, सी॰ एम॰ जे॰ विश्वविद्यालय, शिलांग*

उक्त संदर्भों में समस्या–समाधान का प्रयास भी दिखाई देता है। ''जन–जन रावण, घर–घर लंका, कहां से लाऊँ इतने राम ?''– इस कथन के परिप्रेक्ष्य में तत्कालीन रावण तो एक था लेकिन आज तो विभिन्न नाम–रुपों में हर गली और चौराहे पर रावण नारी को अपमानित करने को आतुर खड़ा है। कवि के शब्दों में–

आज भी संसार में
रावण लूट रहे हैं
नारी अस्मत को।
हर गली चौराहे पर
रावण है खड़ा।

इसीलिए कवि प्रश्न करता है–''आखिर आदमी के अंदर का यह रावण क्यों नहीं मरता ?''5

यादव जी आधुनिक युग में व्याप्त अनेक समस्याओं एवं सवालों से व्यथित हैं। इनके विचार में तनाव, टूटते रिश्ते, असुरक्षा, भ्रष्टाचार, प्रकृति–विनाश आदि इस युग की त्रासदी हैं और इस त्रासदी के लिये कोई और नहीं, स्वयं इनसान उत्तरदायी है क्योंकि स्वार्थवश वही गलती–पर–गलती किये जा रहा है–

पता नहीं इन्सान
क्यों करता है
गलती–पर–गलती !
उसने यहां–वहां
बहुत खोद डाले
धरती और पहाड़।
डसने छोड़े नहीं
कहीं पर भी
दरख्त और झाड़।
प्रकृति के साथ उसने
किया बहुत खिलवाड़।
प्रकृति पर मारता रहा
चोट–पर–चोट।
उसकी नीयत में रहा
बहुत खोट।

भूतकाल पर वर्तमान आधारित है और वर्तमान भविष्य की आधारशिला होता है। इस तथ्य के आलोक में कवि ने सामाजिक रहन–सहन, रीति–रिवाज, बड़े–बूढ़ों के प्रति आदरभाव आदि जीवन–शैली की प्रासंगिकता पर विश्लेषणात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है। 'मां–बाप' कविता के माध्यम से सन्तान के प्रति माँ–बाप का विशुद्ध और निःस्वार्थ त्याग तथा वृद्धावस्था में उनकी दशा का बिंबात्मक एवं सटीक चित्रण किया गया है, यथा–

पके हुए बाल/धंसती हुई आंखें,
विचारों में डूबे हुए
जो आज बिल्कुल मौन हैं,
उनसे सफलता पाकर
तुम पूछते हो ये कौन है ?
. . . . . .
ये अपने भीतर अतीत का
एक संसार छुपाए हुए हैं।

कवि जानता है, देखता है, भोगता है और इसीलिए परेशान है। कवि जो देखता है, वह आप भी देखिये–

नहीं कोई लगाव है,
आपस में मन–मुटाव है,
अन्तहीन तनाव है,
भाई–भाई–भाई में टकराव है,
रिश्तों मे भटकाव है,
.....चारों ओर अंधकार है,
फैला भ्रष्टाचार है।
आज हर गली–बाजार
अनाचार है, दुराचार है
और फैला व्यभिचार है।
जहां बेईमानी का
खूब बोलबाला है।
इन्सान का हर जगह मुंह काला है।

इस कटु यथार्थ को देखकर कवि–मन आक्रोशित हो उठता है। वह जानता है कि इसे सहन करना अब मुश्किल है। किसान की दुर्दशा देखकर तो वह आपे से बाहर हो जाता है तथा उसे लगता है कि अब हल्ला बोलने का वक्त आ गया है–

मित्र किसान,
कब तक सोता रहेगा ?
अपने हल से
धरती पर खींचकर लकीरें।
अब आंख खोल,
हल्ला बोल।
देख, तेरे खेत को चरने
आ रहे हैं सफेदपोश चरैया।
चरने के बाद ये जायेंगे
आराम के लिए
पांच सितारा होटलों में।
देख, भाई देख,
तेरे खेत का तिल
राजपथ की सुन्दरता के लिए
कैसे ताड़ बन गया ?
देख, भाई देख,
तेरे खेत की राई का
उनके तहखानों में
सोने का पहाड़ बन गया।

मैं और पीपल', 'मैं लड़ता रहा' आदि कविताएं कवि के व्यक्तिक सन्दर्भों से जुड़ी हैं। उसे दुःख है कि गॉव के देवता–समान पीपल को प्रकृति की विषम परिस्थितियों और मानवीय भूख ने नष्ट कर दिया, वहीं उसे अवसरवादी भीड़ के बेरहम हाथों ने काट डाला क्योंकि वह अपने उसूलों से डिगने को तैयार नहीं था। फिर भी जब तक संभव हुआ, वह लड़ता रहा, एक अनथक योद्धा का भांति–

एक अनथक योद्धा की तरह
मैं जीवन भर लड़ता रहा
अन्याय और जुल्म के खिलाफ।
जीवन में कभी भी
मैंने मानी नहीं हार।

और लडता ही रहा
धर्म के ठेकेदारों से।
टक्कर लेता रहा
बडे–बडे महाबलियों से।

इस प्रकार हम देखते हैं कि 'अब हल्ला बोल' कविता–संग्रह कथ्य एवं शिल्प के निकष पर खरा उतरता है तथा युगबोध की प्रखरता और सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना की उद्‌बोधकता के कारण यह रचनाधर्मिता का अनूठा निर्देशन प्रस्तुत करता है।11 डॉ॰ चन्द्र त्रिखा ने उचित ही लिखा है कि–''इस संग्रह की कविताओं मे जीवन की कई छोटी–बड़ी सच्चाइयाँ छिपी हुई हैं जो जीवन–संघर्ष को एक्स–रे की भांति दिखाती हैं। संग्रह की कविताएँ आस्था और विश्वास की जमीन पर नव–निर्माण के बीज बोने का आह्‌वान भी करती हैं।'' कविताओं के भाषा–शिल्प के संबंध में उनका कहना है–''इस संग्रह की सभी कविताएँ सरल–सुबोध भाषा, अकृत्रिम शैली एवं मौलिक उद्‌भावनाओं से ओत–प्रोत हैं जो व्यंग्य की पैनी धार का अहसास कराती हैं। कथ्य एवं शिल्प का समुचित सामंजस्य इन कविताओं को और भी रोचक एवं पठनीय बनाने में सफल रहा है।'' डॉ॰ त्रिखा का उक्त कथन इन कविताओं के संबंध में सटीक जान पड़ता है।

संदर्भ–संकेत

१. 'अब हल्ला बोल' की भूमिका, पृष्ठ–७
२. अब हल्ला बोल, पृष्ठ–१७ और १८
३. 'अब हल्ला बोल', पृष्ठ–१६
४. 'अब हल्ला बोल', पृष्ठ–२१
५. 'अब हल्ला बोल', पृष्ठ–२२
६. 'अब हल्ला बोल', पृष्ठ–३४
७. 'अब हल्ला बोल', पृष्ठ–३६
८. 'अब हल्ला बोल', पृष्ठ–२८
९. 'अब हल्ला बोल', पृष्ठ–५० और ५१
10. 'अब हल्ला बोल', पृष्ठ–३०
११. दैनिक ट्रिब्यून (१३ सितम्बर, २००६), पृष्ठ–६